विभा रश्मि

ई-मेल:vibharashmi31@gmail.com

सार्थक

“कौन आनेवाला है ?"
"मेहमान हैं ।"
"क्या अपने साथ तीर्थराज से ही लिवा लाए हो ?"
"यही समझ लो। हाँ सुनो, एक वकील साब भी आएँगे आज या कल में ।"
"क्यों ? वो क्या करेंगे ?" पत्नी का प्रश्न ।
"बताता हूँ, पहले साँस तो ले लूँ ।" पति ने कंधे से स्लिंग बैग उतारकर टेबल पर और अटैची फर्श पर रखते हुए कहा । पत्नी के चेहरे पर आश्चर्य था।
"ईश्वर की कृपा से हमारी संतान, हमारी बेटी काफ़ी है। क्या तुम किसी अनाथ बच्चे को अपने साथ ले आए हो ?"
"हाँ, तुम्हारी एक बेटे की चाहना जो थी... क्या अनाथाश्रम से बेटा गोद ले रहे हो ?" पत्नी हैरान-परेशान लगी।
"वो अभी कहाँ है ?"
"मेडिकल चेकअप के लिए भर्ती किया है ।" अब तो पत्नी की उत्सुकता और बढ़ गई।
"सुनो ! मुझे अपने माता-पिता की कोई स्मृति नहीं ।"
पत्नी चुप्प रही।
"हाँ मैंने...माता -पिता ही गोद लिये हैं...।"
"हे भगवान ! ऐसा जीवन में मैंने तो कभी नहीं सुना, न कभी देखा । तुम्हें क्या हो रहा है ?"
"क्यों ? बूढ़े माँ-बाप केवल बेकदरी करने और त्यागने के लिये हैं ? क्या अपनाए नहीं जा सकते?"
"तो क्या तुमने ...?" पत्नी का प्रश्न ।
"सुनो, मैंने... माँ-बाप कानूनन गोद ले लिये हैं ।" पति ने दृढ़तापूर्वक प्रत्युत्तर दिया ।

सुस्वादु

आज भी सरन के लंच-बाक्स में मूली की भाजी ही थी। सरन का ‘नाज़ुक पाचन तंत्र’ ही इसका कारण रहा होगा । पत्नी ने मूली की भाजी को रोटियों के बीच रखकर आज भी बड़ी कुशलता से ‘रोटी-रोल’ में छिपा दिया था । इसका पता सरन को अपना टिफ़िन खोलने पर ही लगा । लंच टाइम में दोनों साथियों के टिफ़िन खुले । कमरे में कई सुघड़ हाथों के बने भोजन की खुश्बूएँ फैल गयीं । साथ ही सरन के टिफ़िन से उड़ी, मूली की भाजी की गंध भी मुखर हो गयी । दोनों साथियों ने भाजी की गंध सूँघकर अपनी नाक सिकोड़ ली ।

"सुनो ! नहीं ले जाऊँगा पत्तेदार कोई भाजी।" उसने पत्नी से कह दिया था । परंतु पत्नी ने सुबह चुपके से डिब्बे में फिर से मूली के पत्तों की भाजी पैक कर दी।

‘हद हो गई...।’ अपने साथियों को मुँह दबाकर हँसते हुए देखकर सरन को बहुत बुरा लगा—‘वह आलू-मटर , गोभी आदि की मौसमी सब्ज़ी बनाकर रोटी या पराँठे के साथ दे सकती थी ।’

मित्रों के टिफ़िन खुले तो मसाले-अचार की खुशबू नथुनों से दिमाग़ तक जा पहुँची। ‘वाह ...।’ स्वाद ग्रंथियाँ रस छोड़ने लगीं । दोनों ने अपने लंच बाक्स स्टाफ़ रूम की टेबल पर रख दिये । उसने झट से अपना टिफ़िन बंदकर मूली के साग की गंध को तुरंत दबा दिया । साथियों के लंच के डिब्बों से वो थोड़ा-बहुत खाता रहा । तभी बॉस की पी. ए. स्टाफ़ रूम के द्वार पर खड़ी दिखी।

"मिस्टर सरन ! आपके लोन के पेपर तैयार हैं। लंच के बाद एक बार ऑफ़िस में चले जायें ।"

तीनों मित्र उठ खड़े हुए । बॉस की खूबसूरत पी.ए. से वो पूछ बैठे—"मैम, आप भी कुछ लीजिये हमारे साथ ।"

अधखाए टिफ़िन से उन्होंने कुछ नहीं लिया तो सरन ने अपना लंच का डिब्बा ऑफ़र कर दिया जो अभी तक झूठा नहीं किया था । वह लपककर भीतर आयी और सरन के टिफ़िन से मूली की भाजी और रोटी का एक कौर खाकर, उसने भोजन की खुलकर प्रशंसा की । सरन के तीनों साथी बगलें झाँकते नज़र आए । वहाँ बैठे मित्र और खुद सरन को अपनी मूर्खता पर बेहद कोफ़्त हुई । उन्हें लगा वे तीनों बंदर थे जिन्हें अदरक का स्वाद आज पता चला था ।